8

कुछ समझदार बच्चे और कुछ नासमझ बड़े

अक्षय कुमार दीक्षित*

शिक्षण लगातार सीखते जाने का ही दूसरा नाम है... यह और बात है कि हम इस सीखने की प्रक्रिया में सिखाने को भी शामिल कर लेते हैं। लगातार, हर पल सीखना ही हमें पहले से बेहतर इंसान और एक अच्छा शिक्षक बना देता है। हम न सिर्फ़ दूसरों के गुणों से सीखते हैं, बल्कि उनकी कमियों से भी बहुत कुछ सीख जाते हैं। मैं भी अपनी कक्षा के हर बच्चे से, उनके अभिभावकों से और साथी शिक्षकों से हर-पल कुछ न कुछ सीखता रहता हूँ।

बात उन दिनों की है जब मेरी नौकरी को शुरू हुए कुछ ही महीने बीते थे। मेरे स्कूल में नेहरू प्लेस नाम की आलीशान जगह पर बसी झुग्गी बस्ती के बच्चे पढ़ने आते थे। मैं पूरे जोश और मेहनत से पढ़ा रहा था। बच्चों के साथ तरह-तरह की गतिविधियाँ करता....बच्चे भी बहुत उत्साह से उनमें हिस्सा लेते थे। ऐसा ही एक लड़का था भीम। वह मेरे दिए गए हर काम को बहुत सफ़ाई से करता था। उसकी लिखाई और चित्र बाकी बच्चों से बहुत बेहतर होते थे... लेकिन वह खुद उतना ही अस्त-व्यस्त रहता। कमीज़ गंदी और मुड़ी-तुड़ी..लंबे बिखरे बाल, साफ़ नज़र आता कि वह कई दिनों से नहाया भी नहीं है। ऐसी हालत स्कूल के ज़्यादातर बच्चों की थी। लेकिन मेरी कक्षा के बाकी बच्चों में मेरे बार-बार समझाने और ध्यान देने का असर नज़र आने लगा था, सिवाय भीम के। इसलिए मुझे उसकी यह लापरवाही और 'बड़ी' नज़र आने लगी।

मेरी कक्षा में बच्चों ने खुद ही नियम बना लिया था कि वे रोज़ कक्षा में आकर बारी-बारी से सफ़ाई किया करेंगे। इसकी शुरुआत मैंने ही की थी। जिस दिन मैं उस कमरे में आया था, सबसे पहला काम मैंने यही किया था कि एक झाड़ू खोजी और पूरे कमरे की अच्छी तरह सफ़ाई की। जाले उतारे, दीवारों तक की धूल झाड़ी...दीवारों पर चार्ट लगाए..कक्षा को कक्षा जैसा बनाया...इसके बाद तो बच्चे खुद कक्षा को साफ़ रखने में उत्साह लेने लगे थे।

एक दिन मैं प्रार्थना के बाद कक्षा में आया तो एक बच्चे ने बताया, "सर, आज सफ़ाई की बारी भीम की थी लेकिन उसने मना कर दिया।"

मैंने भीम की ओर देखा और झुंझलाहट से पूछा, "क्यों भीम? क्या हुआ?"

उसने नज़रें झुका लीं। दूसरे बच्चों ने बताया, "सर, ये कहता है कि मैं स्कूल में सफ़ाई करने नहीं आता।"

* *शिक्षा सलाहकार*, सी-633 जे.वी.टी.एस. गार्डन, छत्तरपुर एक्सटेंशन., नयी दिल्ली-110074

मैं हैरान भी था और परेशान भी। मैंने भीम से कुछ नहीं कहा। झाड़ू उठाई और सबसे कहा, "कोई बात नहीं, मैं सफ़ाई कर देता हूँ।"

मैंने जल्दी से पूरे कमरे की सफ़ाई की और रोज़मर्रा की तरह पढ़ाने में लग गया। मुझे पता था कि भीम को अच्छा नहीं लगा होगा कि उसके बदले मैंने सफ़ाई की और उस दिन के बाद वह किसी काम के लिए मना नहीं करेगा। ऐसा ही हुआ। भीम फिर कभी किसी काम को करने में दूसरों से पीछे नहीं रहा। लेकिन उसके बालों, कपड़ों और साफ़-सफ़ाई में कोई बदलाव नहीं हुआ।

फिर कुछ ऐसा हुआ कि भीम के प्रति मेरा नज़रिया ही बदल गया।

उन्हीं दिनों बाल गणना का काम शुरू हो गया था। सभी शिक्षकों को आसपास के इलाकों में घर-घर जाकर स्कूल जाने लायक उम्र के बच्चों के बारे में सूचनाएँ इकट्ठा करनी थीं। मुझे नेहरू प्लेस की झुग्गियों का इलाका दिया गया था। किसी झुग्गी बस्ती को इतने नज़दीक से जानने का यह मेरे जीवन का पहला मौक़ा था। तंग गलियों में छोटी-छोटी झुग्गियों में लोगों ने किस तरह अपने आशियाने बना रखे हैं यह, मैं पहली बार देख रहा था। ज़्यादातर ने छोटी जगह के बावजूद सफ़ाई, सुंदरता को जितना हो सकता था, उतना बनाया हुआ था। मेरी कक्षा और स्कूल के कई बच्चे मिलते और मुझे ख़ुशी से अपने घर ले जाते। उनके माता-पिता आदर से आवभगत करते। उनके बच्चों के 'सर' पहली बार उनके घर जो आए थे!

फिर एक गली से दूसरी गली, फिर गली की भी उपगली से होता हुआ मैं एक छोटी-सी कोठरीनुमा झोंपड़ी पर पहुँचा जो ज़मीन से भी एक फुट नीचे थी.. जैसे कोई गुफ़ा हो। अंदर घुप्प अँधेरा। मैंने साथ आए बच्चों से पूछा, "यह किसका घर है?"

"सर, भीम का।"

अचानक अंदर से भीम निकला। उसके चेहरे पर मुझे देखने के बाद भी वही भाव थे जैसे भाव हर समय स्कूल में रहते थे, जैसे उसे न ख़ुशी है, न दुख। मैंने अंदर झाँककर देखा, वह उस छोटी-सी जगह में चूल्हा फूँक रहा था, ईंटों से बना चूल्हा जिसके ऊपर कोयले जैसी काली कड़ाही रखी थी। मैं हैरान रह गया। इसी जगह बैठकर भीम इतने सुंदर चित्र बनाता है! यहीं बैठकर वह इतनी सुंदर लिखाई में सारा काम पूरा करता है! इस छोटी-सी जगह में कैसे दस लोग रहते होंगे! मैं कल्पना भी नहीं कर पा रहा था।

मैं ज़रूरी सूचनाएँ इकट्ठी करके वहाँ से लौट आया लेकिन मेरी नज़रों के सामने से भीम और उसका चूल्हा हट नहीं पा रहे थे। भीम ने बच्चों के बारे में मेरी ज़्यादातर पुरानी धारणाओं को एक झटके में बदलकर रख दिया। हम जाने-अनजाने कक्षा के हर बच्चे को अपने अनुभवों और अपनी दुनिया के चश्मे से देखते रहते हैं, बिना इस बात पर ध्यान दिए कि हर बच्चे की अपनी एक अलग दुनिया है..कितने ही संघर्षों और विकट परिस्थितियों को पार करता हुआ बच्चा हमारी कक्षा में दाखिल होता है और हम कारणों को जानने की कोशिश किए बिना उसपर काम ना करने, बात ना सुनने और भी ना जाने कैसे-कैसे इलज़ाम लगाने लगते हैं! मुझे समझ में आ गया था कि उस दिन भीम ने कक्षा में क्यों सफ़ाई नहीं की होगी। शायद यह उसका तरीका था अपनी परिस्थितियों का प्रतिकार

करने का.. या वह सोचता होगा कि कम से कम स्कूल में तो उसे वह ना करना पड़े जो उसे रोज़ घर में करना पड़ता है..या शायद मेरा ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए उसने वह सब किया हो! भीम के कारण मैं बच्चों के प्रति और ज़्यादा संवेदनशील बन गया। अब तो ये स्थिति है कि मेरा अवचेतन हर पल मेरे हर वाक्य और कार्य पर निगरानी रखता है कि मैं किसी बच्चे पर अपने पूर्वाग्रह थोपने न लग जाऊँ!

ऐसा होता है..कई बार बड़े लोग बच्चों को पूर्वाग्रहों से ग्रस्त नज़र से देखना शुरू कर देते हैं और एक बार किसी बच्चे पर 'होशियार' या 'बेवकूफ' का लेबल लगाने के बाद उसी लेबल के हिसाब से बर्ताव शुरू कर देते हैं। उदाहरण के लिए, मेरी कक्षा के दीपक को ही लीजिए –

मुझे कक्षा 2 पढ़ाने को दी गई थी। जिस शिक्षिका ने उस कक्षा को पिछले साल पढ़ाया था, उसने मुझे दीपक के बारे में बताया, "यह पागल है..पता नहीं क्यों इस स्कूल में आ गया..यह मंदबुद्धि बच्चा है.. क्लास में बस सोता रहता है..मैं तो इसे कुछ नहीं पढ़ा सकी..इसपर टाइम वेस्ट मत करना....।"

मैंने मुस्कुराते हुए उस शिक्षिका की हिदायतें सुन लीं। उन टिप्पणियों का कुछ न कुछ असर तो मुझ पर हुआ ही होगा। लेकिन मैंने दीपक से किसी तरह का कोई भेदभाव नहीं किया और उसे भी बाक़ी बच्चों के बराबर पढ़ाता, खिलाता, डाँटता और समझाता रहा। मैंने महसूस किया कि दीपक सचमुच बाक़ी बच्चों से अलग है। कक्षा में चुप-चाप बैठा रहता है। फिर अचानक कुछ ऐसा कह देता है कि सब हँस पड़ते हैं क्योंकि उसकी बात का विषय कक्षा में चल रही बात से बिल्कुल अलग होता है।

ज़्यादातर बड़े लोग इस बात की चिंता नहीं करते कि उनकी बातों का बच्चों पर क्या असर होगा। शायद उनकी शिक्षिका बच्चों के सामने कई बार दीपक के लिए उन्हीं शब्दों का इस्तेमाल कर चुकी थीं जिन शब्दों का प्रयोग उन्होंने मेरे सामने किया था, और बच्चे दीपक की बातों को उसी नज़रिए से देखने लगे थे। दीपक की लिखाई बहुत खराब थी। वह बहुत कम लिख पाता था, और अगर लिखता भी था तो अपठनीय। मैं उसकी चुप्पी से सबसे ज़्यादा परेशान था क्योंकि मुझे पता ही नहीं चलता था कि उसे कुछ समझ में आ रहा है या नहीं, उसे कक्षा में कैसा लग रहा है, वह किसी चीज़ के बारे में क्या सोचता है... कुछ नहीं पता चलता था।

एक दिन मैं बस स्टैंड से स्कूल जा रहा था। अचानक मेरी नज़र आगे चलते दीपक और उसके पापा पर पड़ी। दीपक चहक रहा था। उसके चेहरे पर इतनी ख़ुशी मैंने पहले कभी नहीं देखी थी। उसके क़दमों में ऐसी फुर्ती थी मानो हवा में उड़ता हुआ स्कूल जा रहा हो। वह बड़े उत्साह से अपने पापा से बातें कर रहा था। उसके पापा जवाब तो दे रहे थे लेकिन ज़्यादातर तो सिर्फ दीपक ही बोल रहा था। मैं हैरान रह गया। जो लड़का स्कूल के अंदर घुसते ही इतना चुप हो जाता है, स्कूल के बाहर उसमें कितना जीवन भरा हुआ है! स्कूल की चारदीवारी के भीतर यह जीवन कहाँ गायब हो जाता है? कौन ज़िम्मेदार है दीपक की चुप्पी का? मैं इन्हीं सवालों में उलझा हुआ स्कूल के अंदर आया। मैंने दीपक के पिता से

बात की। वे भी दीपक जैसे ही मासूम लग रहे थे..वैसी ही निश्छल मुस्कुराहट। मैंने पूछा, "दीपक स्कूल में क्यों नहीं बोलता? ना कुछ काम करता है..ना कुछ लिखता है..ऐसे तो फ़ेल हो जाएगा।"

"पता नहीं सर, घर में तो बहुत बोलता है.."

उन्हें भी दीपक की परेशानी के बारे में कुछ नहीं पता था। अब मैंने ही कुछ करने का निर्णय लिया।

मैंने दीपक को अब हर गतिविधि में शामिल करना शुरू कर दिया। कोई उसपर हँसता तो मैं अपने चेहरे से जता देता कि ऐसा व्यवहार सही नहीं है। धीरे-धीरे सबने उसपर हँसना बंद कर दिया। हाँ, अब हम सब 'मिलकर' हँसने लगे। लिखने में तो कोई बदलाव नज़र नहीं आ रहा था लेकिन अब दीपक पहले के मुकाबले ज़्यादा बोलने लगा था। सवालों के जवाब भी देने लगा था। उसे लगने लगा था कि कक्षा में उसकी बातों पर ध्यान दिया जाता है। मैंने महसूस किया कि जिसे उसकी पिछली शिक्षिका ने पागलपन या मंदबुद्धि का सबूत मान लिया था, वह दरअसल दीपक की तीव्र कल्पनाशक्ति है। वास्तव में दीपक बहुत कल्पनाशील बच्चा था। बैठे-बैठे उसका दिमाग कहाँ जा पहुँचेगा.. कोई नहीं बता सकता। उदाहरण के लिए, एक बार मैं एक कहानी पढ़ा रहा था। बात चली पेड़ों की। मैंने पेड़ों के बारे में कुछ टिप्पणी की और कहानी आगे बढ़ा दी। थोड़ी देर बाद कहानी ख़त्म हो गई और मैं ब्लैक बोर्ड पर कुछ लिखने के लिए खड़ा हुआ। मैं लिखने ही लगा था कि अचानक दीपक खड़ा हो गया (खड़े होने से पहले उसने कभी किसी औपचारिकता की ज़रूरत महसूस की ही नहीं, न ही मैंने ऐसा कोई नियम बनाया था) और बताना शुरू कर दिया, "पता है सरजी, जंगल में शेर होते हैं..मैं भी एक बार जंगल में गया था..मेरे सामने शेर आ गया था.."

मैंने लिखना छोड़ दिया था और दीपक की बातें पूरी रुचि के साथ सुन रहा था। मैंने हैरानी से पूछा, "अच्छा! फिर क्या हुआ?"

"मैंने शेर को मार दिया था।"

"मार दिया? यह तो गलत किया..किसी को मारना तो सही नहीं है।"

"नहीं तो वो मुझे खा नहीं लेता?"

सारे बच्चे भी आनंद से उसकी बातें सुन रहे थे। दरअसल हुआ यह होगा कि दीपक ने पेड़ों से जंगल की रचना कर ली और जंगल में उसकी मुठभेड़ शेर से भी हो गई। इस मुठभेड़ से वह इतना उत्साहित हो गया कि उससे रहा नहीं गया और उसने अपने सर यानी मुझे भी अपने कारनामे का साझीदार बना लिया!

दीपक पास हुआ और बाकी बच्चों के साथ तीसरी कक्षा में पहुँच गया। एक दिन किसी पाठ को पढ़ाते-पढ़ाते मैंने गाँवों का ज़िक्र किया। अचानक दीपक हमेशा की तरह खड़ा हो गया और बोला, "सरजी, आपने पिछले साल भी गाँवों के बारे में बताया था। पाठ नंबर 16 था न, जिसका नाम था पत्र...उसमें आपने बताया था कि गाँवों में गन्ने के रस से गुड़ बनाते हैं।"

मैं हैरान भी था और रोमांचित भी। दीपक को एक साल पुरानी बातें याद थीं जबकि बाकी बच्चे तो क्या, मैं खुद भी उन्हें भूल चुका था..और तो और, उसे पाठ का नाम ही नहीं, नंबर तक याद था! और यही वह दीपक है जिसकी मैडम ने उसे मंदबुद्धि ही नहीं,

पागल तक कहा था (वे आज भी उसे इन्हीं विशेषणों के साथ याद करती हैं) !!

दीपक के उदाहरण से पता चलता है कि हम अपनी अज्ञानता को किस तरह बच्चों पर थोप देते हैं। सच्चाई यह है कि ना तो उस शिक्षिका को दीपक की समस्या के बारे में पता था और ना ही मुझे पता था। शिक्षक प्रशिक्षणों की बुरी हालत के बारे में आप जानते ही हैं। ज़्यादातर शिक्षक प्रशिक्षणों के पाठ्यक्रम में वर्षों पुरानी सैद्धांतिक बातें शामिल हैं। वास्तविक समस्याओं और अनुभवों की उनमें कोई जगह नहीं है...इसलिए हम दोनों ही दीपक की समस्या से अनजान थे। वर्षों बाद मुझे एहसास हुआ कि शायद दीपक ऑटिज्म से ग्रस्त था। ऑटिज्म क्या होता है, यह उस समय हमें तो क्या, खुद दीपक के पिता को भी नहीं पता था जबकि वे उसपर काफ़ी ध्यान देते थे।

दुर्भाग्य से ज़्यादातर अभिभावकों को अपने बच्चों के बारे में बहुत कम जानकारी होती है। कई अभिभावक तो अपने बच्चों के बारे में इसलिए अनजान होते हैं क्योंकि उनके पास अपने बच्चों के लिए समय ही नहीं होता। ऐसे अभिभावक स्कूल में भी बार-बार बुलाने के बाद ही आते हैं। ऐसे अभिभावकों की अपने बच्चों के प्रति टिप्पणियाँ भी बड़ी रोचक होती हैं:

"क्या करें सरजी , ई तो हमार भी नाही सुनता है।"

"सरजी, इसे खूब मारा करो।"

"सरजी, चमड़ी उधेड़ डालो इसका...सारा हड्डी तुमरा, हमें तो बस चमड़ी दे देना..हम कुछ नहीं कहेंगे.."

कुछ अभिभावक ऐसे भी होते हैं जो शिक्षक पर रौब जमाने के उद्देश्य से कक्षा में आते हैं और कभी सलाह तो कभी कर्तव्यों की याद दिलाते हैं। ऐसे ही एक पिता थे सचिन नाम के लड़के के।

कुछ दिनों पहले ही मेरी कक्षा में सचिन का दाखिला हुआ था। मैं कोई भी काम करने को कहता, सचिन पर कुछ असर नहीं होता। मैंने खुद उसकी कॉपी में अपने हाथ से काम लिखना शुरू किया कि शायद अब उस पर कोई असर हो। लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हुआ। फिर मैंने उसके पिता को बुलाया। मैं उन्हें इसलिए बुला रहा था ताकि उनके साथ सचिन की पढ़ाई को लेकर चर्चा कर सकूँ। कई बार बुलाने के बाद वे कक्षा में आए और आते ही बोले, "सरजी, इसे होमवर्क दिया करो।"

मुझे उनके व्यवहार पर गुस्सा तो आया लेकिन मैंने शांति से उनके बच्चे को बुलाया, "बेटा, ज़रा कॉपी लेकर आओ।" मैंने सचिन की कॉपी का एक-एक पन्ना पलटकर पिता महाशय को दिखाया। उस कॉपी में कम से कम 20 पन्नों में मैंने खुद अपने हाथ से काम करने के लिए दिया हुआ था। उन्होंने तो शायद कभी सचिन की कॉपी खोलकर देखी ही नहीं होगी वरना वे आते ही ऐसी टिप्पणी न करते। वे घर पर तो अपने बच्चे पर ध्यान देते नहीं होंगे, लेकिन स्कूल में आए तो सोचा, टीचर को तो जता ही दूँ कि मुझे अपने बच्चे की फ़िक्र है! कॉपी देखने के बाद उनके मुँह से और कोई सलाह नहीं निकल सकी और उन्होंने सचमुच अपने बेटे की पढ़ाई पर ध्यान देना शुरू कर दिया।

जिन बच्चों पर घर में ध्यान नहीं दिया जाता, उनकी सिर्फ़ पढ़ाई-लिखाई पर ही इस उपेक्षा का असर नहीं पड़ता बल्कि उनके व्यक्तित्व और सामाजिक विकास पर भी इसके बुरे असर नज़र आने लगते हैं। ऐसे बच्चे कक्षा में अलग-थलग रहते हैं। ऐसे ज़्यादातर बच्चे कक्षा में पीछे बैठने की कोशिश करते हैं ताकि टीचर की उनपर नज़र ना पड़े। उसकी बाक़ी बच्चों से दोस्ती भी ना के बराबर होती है। वे बातचीत भी अपने जैसे बच्चों से ही करते हैं क्योंकि अपने जैसे बच्चों के साथ उन्हें हीन भावना का सामना नहीं करना पड़ता। धीरे-धीरे वे कक्षा से मानो गायब ही हो जाते हैं। सबसे खतरनाक बात यह है कि ऐसे बच्चे कक्षा या स्कूल के रौबीले बच्चों की ज़्यादतियों का भी सबसे ज़्यादा शिकार बन जाते हैं। सचिन भी ऐसा ही संकोची और एकाकी बच्चा बनने जा रहा था।

कक्षा में दूसरों को तंग करने वाले और दूसरों से तंग होने वाले बच्चों को पहचानना जितना आसान लगता है, उतना है नहीं। कई बच्चे तो साफ़ नज़र आते हैं जो दूसरों को तंग कर सकते हैं या करते हैं लेकिन कई बच्चे ऐसे काम केवल उस समय करते हैं जब शिक्षक आसपास ना हो। ऐसे बच्चों (जिन्हें अंग्रेज़ी में बुली कहते हैं) की शिकायत भी नहीं होती क्योंकि सब उनसे डरते हैं या उनकी दोस्ती को खोना नहीं चाहते। अगर डरने वालों और डराने वालों को सबके सामने उजागर कर दें या उन्हें समझाएँ/ डाँटें तो इसके भी उलटे परिणाम निकल सकते हैं। इन बातों को ध्यान में रखकर मैंने ऐसे बच्चों को पहचानने और उनकी मदद के लिए एक अनोखा तरीका खोज लिया था।

मैं हर शनिवार को बच्चों को कागज़ की एक-एक पर्ची देता था और उनसे कहता था, "इस पर्ची पर उस बच्चे/बच्चों का नाम लिखो जिसके साथ तुम अगले हफ़्ते बैठना चाहोगे।" बच्चों को मैं साफ़-साफ़ बता देता था, " यह कतई ज़रूरी नहीं है कि तुम्हें उन बच्चों के पास बैठने का मौक़ा मिल ही जाएगा क्योंकि एक बच्चे के साथ सिर्फ़ एक बच्चा ही बैठ सकता है।" कभी-कभी मैं उनसे कहता, "कक्षा का जो बच्चा तुम्हें सबसे अच्छा लगता है, उसका नाम लिखकर बताओ कि वह तुम्हें क्यों अच्छा लगता है।" सभी बच्चे पर्चियों को बंद करके मुझे सौंप देते। इस गतिविधि में कोई किसी की चुगली नहीं कर रहा होता, इसलिए सब बिना किसी डर के अपनी सच्ची इच्छा कागज़ पर लिख देते हैं।

इसके बाद जब बच्चे खेल रहे होते, कोई काम कर रहे होते या घर जा चुके होते, मैं पर्चियों को ध्यान से देखता। मैं यह देखता कि कौन-से बच्चे ऐसे हैं जिनके पास कोई भी बैठना पसंद नहीं करता। मैं यह भी देखता कि कौन-कौन से बच्चे हमेशा साथ-साथ बैठना पसंद करते हैं। कौन-से बच्चे किन्हें पसंद करते हैं और क्यों? कौन-से बच्चे ऐसे हैं जिन्हें कोई भी पसंद नहीं करता। कौन ऐसा बच्चा है जिसने किसी को पसंद नहीं किया? किसे पिछले हफ्ते तो ढेरों बच्चों ने पसंद किया था लेकिन इस बार किसी ने नहीं किया? ऐसा क्यों हुआ होगा?

आपने देखा कि केवल बच्चों की पसंद पूछना या उनके लिए पसंद की जगह खोजना मेरा उद्देश्य नहीं था। मैं तो दरअसल उन बच्चों को खोज रहा था

जो अकेले रहते हैं या दूसरे बच्चों से दोस्ती करने में कठिनाइयों का अनुभव कर रहे हैं। मैं उन बच्चों को खोज रहा था जो दूसरों को तंग करते होंगे या तंग होते होंगे। इस तरीके के ज़रिए मैं बच्चों के दिलों तक पहुँच पा रहा था, उन बच्चों की पहचान कर पा रहा था जिन्हें सचमुच मेरी ज़रूरत हो सकती है। उन बच्चों की पहचान करके मैं ऐसी गतिविधियाँ करवाता जिनसे उन एकाकी बच्चों की प्रतिभाओं को सामने आने का मौक़ा मिले, उन्हें मैं गतिविधियों के माध्यम से यह भी बताता कि कैसे दोस्ती की जा सकती है और कैसे एक-दूसरे के साथ चीज़ों को बाँटा जा सकता है। इस तरह, वे बच्चे भी खुद-ब-खुद पीछे हट जाते जिन्हें दूसरों को बिना वजह तंग करने की आदत होती है क्योंकि उन्हें पता होता है कि जिन्हें वह तंग करते थे, वह अब अकेला नहीं है। कभी-कभी तो तंग करने वाले और तंग होने वालों में पक्की दोस्ती हो जाती है!

सच्चाई यह है कि हर तरह की हिंसा की शुरुआत अलगाव से ही होती है। हर बाहरी हिंसा का प्रारंभ भीतरी अकेलेपन से ही होता है। जिन बच्चों को हमेशा नज़रअंदाज़ किया जाता रहा है, वे दूसरों का ध्यान आकर्षित करने के लिए कुछ भी कर सकते हैं। उत्पात करना, दूसरों को तंग करना या कही गई बात से उलट काम करना, कुछ भी ऐसा जिससे दूसरों का ध्यान उनके अस्तित्व की ओर जाए। इसलिए मैं ऐसी नौबत आने से पहले ही उनकी पहचान करके उन परिस्थितियों को ही बदलने का प्रयास कर रहा था जिनकी परिणति हिंसा के विशाल वृक्ष के रूप में हो सकती है। मैं उन बच्चों के जीवन को बदलने की कोशिश कर रहा था...जिन्होंने मेरे जीवन को बदल दिया था।

❑❑❑